International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 9, Issue 6, June 2022
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

प्रेमचंद जी के उपन्यासों में समाज दर्शन

डॉ पंकज कुमार

सहायक आचार्य

हिंदी

हाडारानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सलूंबर

उदयपुर ;राजस्थानद्ध

313027

सार

*हिन्दी में आधुनिक काल का आगमन **1900** के दशक से माना जाता है। प्रारम्भ में आधुनिक हिन्दी साहित्य जादुई और परियों की कहानियों पर केन्द्रित था, जो कल्पना से पाठकों का मनोरंजन करता था। धनपत राय श्रीवास्तव के रूप में जन्मे, उन्होंने नवाब राय नाम से एक स्वतंत्र लेखक के रूप में अपना करियर शुरू किया लेकिन जब उनका काम सोज-ए वतन, लघु कथाओं का एक संग्रह ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया और जला दिया गया, इसके बाद उन्होंने मुंशी प्रेमचंद नाम से हिंदी में लिखना शुरू किया। प्रेमचंद को आमतौर पर भारत के टॉल्स्टॉय के रूप में जाना जाता है, जिसने हिंदी साहित्य को एक वास्तविकता में आकार दिया। उन्होंने एक उपन्यासकार, कहानीकार और एक नाटककार के रूप में साहित्यिक शैली पर विजय प्राप्त की और हिंदी आधुनिक साहित्य में उपन्यास सम्राट (उपन्यासों के सम्राट) के रूप में शीर्षक दिया गया। उन्होंने पाठकों के सामने समाज की वास्तविकता का चित्रण कर हिंदी साहित्य जगत को एक नया आयाम दिया। उन्होंने अपने उपन्यास सेवासदन से वर्ष **1917** में हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया।*

मुख्य शब्द: *हिन्दी साहित्य, उपन्यास, समाज दर्शन*

प्रस्तावना

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के अग्रणी लेखकों में से एक हैं। उनसे पहले, उपन्यास विधा में रोमांटिक था और यह व्यक्तिगत स्वाद और जरूरतों को पूरा करता था। प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास में यथार्थवाद के तत्व का परिचय दिया। वह लेखन की व्यक्तिवादी विधा के विरोधी हैं और उस तरह के साहित्य के पक्षधर हैं जो व्यक्तियों में रचनात्मकता की भावना का संचार करने में सक्षम है। वह जीवन के प्रति मानवीय दृष्टिकोण में विश्वास करता है। उनके लिए साहित्य तभी पूर्ण और सार्थक होता है जब वह व्यक्ति को व्यक्तिगत परिसरों और विश्वासों से

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

मुक्त करने में सक्षम हो। यह एक व्यक्ति को एक विशिष्ट संवेदनशीलता विकसित करने में सक्षम बनाता है जो रचनात्मक आवेग के साथ आम को सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम है। उन्होंने **17** उपन्यास और **300** से अधिक लघु कथाएँ लिखी हैं, जो उनके समय में समाज में प्रचलित सामाजिक मुद्दों को चित्रित करती हैं। उन्होंने सामंती व्यवस्था, जमींदारी व्यवस्था, गरीबी, सांप्रदायिकता, जाति व्यवस्था और समाज में प्रचलित सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव का भी जिक्र किया। उन्होंने दहेज प्रथा, विधवा विवाह के खिलाफ लड़ाई लड़ी और कहा कि महिलाओं को बाहर आना होगा और अपने ऊपर दिखाए गए सामाजिक बुराइयों और भेदभाव के खिलाफ अपनी भावनाओं को व्यक्त करना होगा। उन्होंने अपने आसपास के जीवन पर लिखा और पाठकों को अपने आसपास की सामाजिक संरचना से अवगत कराया। उन्होंने अपने काम में आम आदमी को उनके सामने आने वाली समस्याओं का चित्रण करके उन्हें नायक और नायिकाओं का दर्जा देकर चित्रित किया। इस प्रकार वह हमारे सामने वास्तविक भारत प्रस्तुत करता है।

गीतांजलि पांडे ने अपनी पुस्तक बिटवीन टू वर्ल्ड्स लिटरेचर को हमारे जीवन की आलोचना और विश्लेषण करना चाहिए, में साहित्य पर प्रेमचंद के विचार व्यक्त किए हैं। जो साहित्य समाज की बागडोर नहीं चलाता, उस पर धर्म का नियंत्रण था .आज साहित्य ने अपनी जगह बना ली है और उसका साधन सौन्दर्य के प्रति प्रेम है। दलित, पीड़ित और वंचित-उनकी सुरक्षा और हम में सच्ची ताकत और दृढ़ संकल्प हमारे वर्तमान समय में हमारे लिए बेकार है। पहले के युग में वकालत साहित्य का कर्तव्य है।

मुंशी प्रेमचंद न केवल सामाजिक संदर्भ और परिवेश में एक व्यक्ति के अस्तित्व और मूल्य को स्वीकार करते हैं, बल्कि वे यथार्थवादी चित्रण और समस्याओं के विश्लेषण में भी विश्वास करते हैं। एक लेखक के रूप में उनका उद्देश्य समाज की बेहतरी है। इस अर्थ में प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थवाद अपने युग के किसी भी अन्य लेखक की तुलना में अधिक सकारात्मक और प्रगतिशील है। लेखन के व्यक्तिवादी और मनोविश्लेषणात्मक तरीकों में, चेतन और अवचेतन तत्वों की अभिव्यक्ति लेखकों का मुख्य उद्देश्य है। लेकिन जहां तक मानव चेतना के विकास का संबंध है, सामाजिक और सामूहिक परिस्थितियों का अपना महत्वपूर्ण योगदान है। उपन्यासकार अपने लेखन में सामाजिक परिप्रेक्ष्य का अनुसरण करते हुए व्यक्ति और समाज के कल्याण के बारे में भी अधिक स्पष्ट और प्रभावी ढंग से कल्पना करते हैं। जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण उनके लेखन में परिलक्षित होता है जो उनकी कला को अधिक अभिव्यंजक और सत्य बनाता है।

भारत के अग्रणी आधुनिक हिंदी लेखक प्रेमचंद एक कुशल कहानीकार थे। मानवीय स्थिति के संबंध में उनकी वास्तविक चिंताएँ थीं। वह अपने चारों ओर मूर्खता, पाखंड और अनावश्यक अमानवीयता देख सकता था। लेकिन नकारात्मक न होते हुए, यह दृढ़ विश्वास रखते हुए कि हम सभी आखिरकार इंसान हैं, उन्होंने खूबसूरती से छूने वाली कहानियों को बुना, जिसमें विभिन्न विषयों पर कब्जा कर लिया, चाहे वह बच्चे की कोमलता हो, पैसे का पाखंड हो, दोस्ती की सुंदरता हो और मुक्ति मार्ग की कहानी हो।

वह वास्तव में हम में से प्रत्येक में रहने वाली गहरी मानवता को प्रस्तुत करता है। सामग्री और साहित्यिक शैली के संदर्भ में इस कहानी का गहरा सौंदर्य महत्व है। कहानी की सामग्री वास्तविक जीवन की घटनाओं से ली गई है जिसे सभी पहचान सकते हैं और फिर भी जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, प्रेमचंद इसे एक गहरा महत्व देते हैं और इस तरह से कथानक और विषय को उत्कृष्ट तरीके से जोड़तयह आधुनिक और यथार्थवादी है और फिर भी पाठक को मनुष्य के भाईचारे के गहन संदेश से प्रभावित करता है। भाषा की गणना सरल होने

के लिए की जाती है और यह दिल तोड़ने वाले चरमोत्कर्ष की ओर ले जाती है। संवाद आवश्यक चुनिंदा शब्दों और स्थानीय में रोजमर्रा के संवाद हैं लेकिन अर्थ स्थानीय, ठोस से परे है और सार्वभौमिक को सामने लाता है और इस प्रकार स्थान और समय से परे है। यह कहानी लेखन अपने चरम पर है। एक और गहरा बिंदु यह है कि जिस तरह से लेंस की तरह फोकस एक छोटी कहानी के कम समय और स्थान में मौजूद होता है। यह लघु कथा भी अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में है।

उद्देश्य

1. समाज दर्शन का अध्ययन करना

2. प्रेमचंद के सामाजिक संदर्भ और परिवेश का अध्ययन

प्रेमचंद जी के उपन्यासों में समाज दर्शन

लघु कथाएँ सीमित नहीं हैं वास्तव में प्रारूप की बहुत ही संक्षिप्तता लेखक को एक गंभीर बिंदु बनाने के लिए चुनौती देती है, और केवल एक बिंदु, जो पाठक को गहराई से प्रभावित करता है। कोई इस बात पर बहस नहीं करेगा कि प्रेमचंद ऐसा करने में सफल हो जाता है। पाठक जो वास्तव में कहानी में उतरता है, वह अपने जीवन को रूपांतरित होने के लिए पाता है और कहानी एक संवेदनशील पाठक के लिए उथल-पुथल हो सकती है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यास निर्मला (**1927)** में दहेज प्रथा और बेमेल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों को उजागर किया है जिसमें युवती हमेशा पीड़ित होती है। वास्तव में, यह उपन्यास निर्मला नाम की एक युवा लड़की की दयनीय कहानी है, जिसकी शादी एक वृद्ध विधुर से हुई है और उसके कई बच्चे हैं। पति द्वारा बेवफाई के शक में उसे काफी मानसिक प्रताड़ना से गुजरना पड़ता है। उपन्यास की कार्रवाई तीन परिवारों के इर्द-गिर्द घूमती है। निर्मला नाम का केंद्रीय चरित्र इन परिवारों के बीच की सामान्य कड़ी है। उपन्यास रंगभूमि (**1925)** ग्रामीण गरीबी, जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता और स्वतंत्रता पूर्व भारत की पृष्ठभूमि में अमीरों और वंचितों के बीच तनाव सहित सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाता है। औद्योगीकरण की प्रतिक्रिया काफी स्पष्ट है। उद्योगपति को अपने व्यावसायिक हितों के प्रति जुनूनी और जुनूनी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, वह बिना किसी शर्म के वफादारी को बदल देगा। एक उद्योगपति प्रभु सेवक स्पष्ट रूप से घोषणा करते हैं कि यदि नरभक्षी नहीं है तो व्यवसाय कुछ भी नहीं है। मनुष्य को पशु के रूप में देखना और उसके साथ पशु की तरह व्यवहार करना व्यापार जगत का आदर्श वाक्य है। कोई व्यक्ति तब तक व्यवसायी नहीं बन सकता जब तक कि वह अपने साथी मनुष्यों के प्रति क्रूर न हो। इस प्रकार, उपन्यासकार भारतीय गांवों में सदियों पुरानी सामाजिक परंपराओं और नए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की लहर के बीच संघर्ष को चित्रित करता है। प्रेमचंद का सबसे प्रमुख उपन्यास कर्मभूमि (**1932)** जो राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखा गया था, उनके समकालीन काल की कई सामाजिक बुराइयों को चित्रित करता है जैसे कि नशा और अशिक्षा के उपयोग से मंदिरों में प्रवेश के लिए अछूत प्रतिबंध, भूमि विवाद, जमींदारों का अत्याचार और गांधीजी के नेतृत्व में युवाओं में राष्ट्रवादी ताकतें। प्रेमचंद किसानों के बारडोली आंदोलन, वर्धा में अछूतों के लिए लक्ष्मीनारायण मंदिर के द्वार खोलने और गांधी इरविन संधि आदि से बहुत प्रभावित थे। उपन्यास स्पष्ट

रूप से भारतीय विचार के मूल दर्शन को प्रदर्शित करता है और इसके कई अवलोकनों को अनलॉक करता है।

कर्म शब्द ही एक अर्थ में मानव जीवन में कर्तव्य, कार्य और कार्य के महत्व को दर्शाता है। दूसरा शब्द भूमि का अर्थ है पृथ्वी, जमीन और मैदान। इसलिए, उपन्यास को द फील्ड ऑफ एक्शन माना जा सकता है और उपन्यास का मुख्य विषय सामाजिक बुराइयों को उजागर करना है। प्रेमचंद उपन्यास की शुरुआत में ही शिक्षण संस्थानों में होने वाले अत्याचारों पर प्रकाश डालते हैं।

मुंशी प्रेमचंद के अलावा, सियाराम शरण गुप्त, विशंभरनाथ कौशिक, अमृतलाल नागर और फणीश्वर नाथ रेणु जैसे कई अन्य लेखक भी एक लेखक के सामाजिक दायित्व में अपना विश्वास व्यक्त करते हैं। प्रेमचंद की रचनाओं में सुधारों और आदर्शों पर अधिक बल दिया गया है। आर्य समाज, गांधी, टॉल्स्टॉय, गल्सवर्थी के यथार्थवाद और मार्क्स के प्रगतिशील विचारों का प्रभाव उनके लेखन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

उनकी लेखन कला इन रचनात्मक प्रभावों से विकसित हुई है। सामाजिक परिवर्तन और बौद्धिक उत्तेजना की प्रवृत्ति, और प्रेमचंद से अमृतलाल नगर और फनीश्वर नाथ रेणु में संक्रमण एक विकासवादी रहा है। वे सभी किसी विशिष्ट संप्रदायवादी दर्शन में विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि मानवीय मूल्यों में उनका दृढ़ विश्वास है। इन उपन्यासकारों की रचनाओं की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि उनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास ठोस से अमूर्त की ओर, वास्तविक से आदर्श की ओर एक उल्लेखनीय गति को दर्शाता है। प्रेमचंद के उपन्यासों जैसे गोदान और मंगलसूत्र में, चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक सत्य और व्यवहार के पैटर्न का जबरदस्त प्रभाव दिखाते हैं। विचार प्रेमचंद किसी मनोवैज्ञानिक प्रणाली का पालन नहीं करते हैं, फिर भी वे अपने उपन्यासों में जीवन के यथार्थवादी चित्रण के लिए अपनी मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि का उपयोग करते हैं।

सामाजिक यथार्थवाद

मुल्क राज आनंद द्वारा स्थापित भारतीय कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद का अधिवेशन **1950** के दशक और **60** के दशक की शुरुआत में भबानी भट्टाचार्य, मनोहर मालगोंकर और खुशवंतसिंह के माध्यम से हुआ। भबानी भट्टाचार्य के कथा साहित्य का सामाजिक उद्देश्य है, क्योंकि उनका मानना है कि श्उपन्यास में एक सामाजिक उद्देश्य होना चाहिए । सामाजिक 'शब्द मानव गतिविधि के सभी पहलुओं को शामिल करता है जो दूसरों के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करते हैं। 'सामाजिक यथार्थवाद' का अर्थ सामाजिक जीवन की बेहतर समझ है, यह समाज की प्रकृति और कार्य, इसकी विभिन्न संस्थाओं और परंपराओं और उनके कामकाज को देखने के लिए एक अतिरिक्त साधारण शक्ति है। यह सामाजिक प्रक्रिया का एक बौद्धिक और मिनट अवलोकन है।

सामाजिक यथार्थवाद समाज के लिए बेहतर समाधानों के साथ जीवन की बेहतर व्याख्या प्रस्तुत करता है। **19** वीं शताब्दी में अंग्रेजी साहित्य में डिकेंस, जॉर्ज एलियट, मेरेडिथ और ठाकरे जैसे कई लेखकों ने इस दिशा में योगदान दिया। भारतीय साहित्य में हमारे पास शरत चंद्र, प्रेमचंद और मुल्क राज आनंद जैसे उल्लेखनीय लेखक हैं जिन्होंने क्रमशः बंगाली, हिंदी और अंग्रेजी साहित्य को एक नई दिशा दी। मार्क्सवादी दर्शन के माध्यम से, सामाजिक यथार्थवाद की अवधारणा ने साहित्य में प्रवेश किया। हालाँकि भारतीय लेखक

माकर्सवादियों से सीधे प्रभावित नहीं थे, लेकिन वे साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद के निर्माण में वामपंथी विचारधारा से गहरे प्रभावित थे। इस प्रकार, चेंमे यथार्थवाद ', एक पहरेदार के रूप में, प्रगतिशील और विकासवादी आंदोलनों को पार करता है और मुल्क राज आनंद और प्रेमचंद इस आंदोलन के लेखक हैं।

सामाजिक यथार्थवाद आदर्शवाद और रोमांटिकवाद की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। औद्योगिक क्रांति केकारण, अमीर और गरीब के बीच की खाई व्यापक और व्यापक हो गई। इस प्रकार, उच्च वर्गों के धन औरदलितों की गरीबी के बीच एक मजबूत अंतर दिखाई दिया। यह एक नई सामाजिक जागरूकता लाया औरप्रेमचंद और मुल्क राज आनंद जैसे लेखकों को अपनी सुंदर कला, उपन्यासों के माध्यम से इस भेदभाव केखिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, उन्होंने समकालीन जीवन के बदसूरत पक्ष पर अधिकध्यान केंद्रित किया और कामकाजी और गरीब लोगों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की। उन्होंने जो कुछ महसूसकिया और देखा, उसे बहुत ही विवादित और निष्पक्ष तरीके से प्रस्तुत किया।सामाजिक यथार्थवाद जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी जटिलताओं, बारीकियों के साथ व्यक्तिगत, सामाजिकऔर सांस्कृतिक परिवर्तनों को इंगित करता हैय परिवार, वर्ग, विवाह, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, नैतिकता,शिक्षा, रीति-रिवाजों और परंपराओं, अंतर संबंधों आदि से संबंधित पहलू। यह समाज के काले पक्ष को दर्शाता है जैसे बेरोजगारी, समाज में कुप्रथा, समाज की बुराइयां, युवा अशांति, सामाजिक अपराध, उनकेकारण और परिणाम।

सामाजिक यथार्थवाद और प्रेमचंद

हिंदी उपन्यास उन्नीसवीं सदी में विकास की स्थिति में था। प्रेमचंद से पहले, यह जादुई या धोखे कीकहानियों, मनोरंजक कहानियों और धार्मिक विषयों के इर्द-गिर्द घूमता था। इस प्रकार, उनके सामने हिंदीउपन्यासकार उपन्यास के सटीक उद्देश्य को पूरा नहीं कर सके क्योंकि वे या तो केवल उपदेशात्मक थे या केवल उपदेशात्मक तत्व का अभाव था। वे दोनों को संतोषजनक ढंग से मिश्रण करने में विफल रहे औरयहां तक कि पश्चिम में उपन्यास के विकास से लाभ नहीं उठा सके। प्रेमचंद पहली बार उपन्यास के रूपऔर उद्देश्य को समझते हैं और इस पश्चिमी रूप में भारतीय विषयों, मुद्दों और विश्वदृष्टि के साथ आदर्शवाद और यथार्थवाद का मिश्रण करते हैं। वह न केवल अपने मूल्यवान योगदान से इसे समृद्ध करता है बल्किसाहित्यिक रूप को एक विशिष्ट दिशा और विकास प्रदान करता है। इस प्रकार, उन्हें हिंदी उपन्यास औरप्रगतिशील आंदोलन के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक माना जाता है। प्रीप्रमचंद युग औरप्रेमचंद युग के रूप में हिंदी उपन्यासों का सीमांकन न केवल कालानुक्रमिक रूप से आधारित है बल्कि इनविशिष्ट साहित्यिक विशेषताओं पर आधारित है। इसी तरह प्रेमचंद की उम्र और प्रेमचंद की उम्र भी साहित्यकी दो अलग-अलग धाराओं का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार, उनकी पूर्ववर्ती और सफल आयु के बीचका स्थान हिंदी साहित्य के लिए विशिष्ट मानकों को दर्शाता है। भारत में, मुंशी प्रेमचंद यूरोपीय शैली कीलघु कथाएँ लिखने वाले पहले उर्दू लेखक थे। उनका मानना था कि सौंदर्य के मानकों को बदलने कीजरूरत है, साहित्य को सामाजिक सुधार का एक साधन होना चाहिए, और ग्रामीण और शहरी गरीबी,महिलाओं के उत्पीड़न और जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक यथार्थ की समस्याओं का पता लगाना चाहिए।

आनंद का यथार्थवाद भारतीय उपन्यास की तकनीक में भी एक नवीनता है, क्योंकि यह भारतीय उपन्यासको आगे बढ़ाता है जहाँ से प्रेमचंद ने इसे छोड़ा था। यह प्रेमचंद ही हैं, जिन्होंने भारतीय उपन्यास में पहलीबार अपने उपन्यासों के नायक के रूप में किसानों और दलित लोगों का चयन किया। यहां तक कि वहभारतीय समाज में वर्ग और जाति के विरोध को भी देखता है और साम्राज्यवादियों, सामंतों और पूंजी पतियों द्वारा गरीबों के शोषण का सफलतापूर्वक वर्णन करता है। हालाँकि, वह सामंती समाज से भारत में उद्योगवाद के परिवर्तन के ऐतिहासिक महत्व को समझने में असमर्थ है। इसलिए वह मानव प्रयासों में कट्टरवाद के बजाय सामाजिक विकास में विश्वास करता है।

मुल्क राज आनंद ने भारतीय उपन्यास परअपने क्रांतिकारी और मानवतावादी दृष्टिकोण को जीवन की सामाजिक चेतना और प्रेमचंद के उपन्यासों मेंजीवन की यथार्थवादी उपचार और रबींद्रनाथ टैगोर के कलात्मक परिप्रेक्ष्य में जीवन के यथार्थवादी उपचारको जोड़कर विस्तार किया है। आनंद का यथार्थवाद इस प्रकार प्राप्त संश्लेषण पर आधारित है। प्रेमचंद कामानना है कि कविता और साहित्य का उद्देश्य हमारी अनुभूतियों को और प्रगाढ़ करना हैय लेकिन मानवजीवन विपरीत लिंग के प्रेम तक सीमित नहीं है। वह सवाल करता हैरू क्या साहित्य जो जीवन की कठोर वास्तविकताओं से भागने के लिए महत्वपूर्ण मानता है, विचारधारा और अभिव्यक्तियों से संबंधित हमारीआवश्यकताओं को पूरा कर सकता है**?** शृंगारिक स्वभाव जीवन के कुछ हिस्सों में से एक है। यह न तो गर्वकी बात के रूप में कार्य करता है और न ही अच्छे स्वाद का उदाहरण अगर किसी विशेष जाति के साहित्य का अधिकांश हिस्सा इसके साथ जुड़े। ख्प्रेमचंद 2002-10.

प्रेमचंद समकालीन पाठकों के बीच साहित्य के स्वाद के बदलाव को मानते हैं, यथार्थवाद के प्रति उनकेझुकाव की सराहना करते हैं। साहित्यिक अभिरुचि में इस बदलाव पर विस्तार से उन्होंने टिप्पणी कीरूलेकिन हमारा साहित्यिक स्वाद तेजी से बदल रहा है। अब साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है,बल्कि इसके कुछ अन्य उद्देश्य भी हैं। अब यह न केवल नायक और नायिका के मिलन और अलगाव कीकहानी बयान करता है, बल्कि जीवन से जुड़े मुद्दों और उनके समाधान प्रदान करने के प्रयासों पर भी चचा करता है। न तो यह आश्चर्यजनक और आश्चर्यजनक घटनाओं से प्रेरणा प्राप्त करता है और न ही इसहमले की जांच करता है। लेकिन यह उन मुद्दों में एकीकृत है जो समाज और व्यक्ति को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद के सभी उपन्यास सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक बुराइयों जैसे गरीब किसानों का शोषण, वेश्यावृत्ति, बाल विवाह, विधवाओं की समस्याओं के अध्ययन और आलोचना के लिए उनके उत्साह को दर्शाते हैं। उनका युग राजनीतिक उथल-पुथल और तेजी से सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का युग था, जिसने प्रेमचंद की प्रतिभा का उदय और फूल देखा। जब प्रेमचंद ने लिखना शुरू किया, तो वे प्रचलित सामाजिक और राजनीतिक अशांति से असंतुष्ट थे। एक लेखक के रूप में उनका उद्देश्य समाज को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाना था। इसलिए उन्होंने सामाजिक मुद्दों और सामाजिक नैतिकता पर एक नए प्रकाश में, समकालीन समाज के लिए नई चर्चा की। इस प्रकार प्रेमचंद अपने समय के प्रतिनिधि लेखक बने हुए हैं।

संदर्भ

1. रजनी। महिला अधिकार और प्रेमचंद के गोदान में भूमिकाएं- एक साहित्यिक विश्लेषण, जर्नल ऑफ साउथ एशियन लिटरेचर, वॉल्यूम **21,** नंबर **2 2.** प्रेमचंद समर पर निबंध, **2017** में गिरावट। **57-64**

2. पांडे, गीतांजलि। कितना समान**?** प्रेमचंद के लेखन में महिलाएं। **"** आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, **2016.2183-2187**।

3. घोष, विजया। प्रेमचंद की दुनिया। पुस्तक समीक्षा अभिलेखागार से। द गुड बुक्स ट्रस्ट, **2012**।

4. शर्मा, कृति मुंशी प्रेमचंद द्वारा। रिसर्च स्कॉलर (एन इंटरनेशनल रेफरीड ई जर्नल ऑफ लिटरेरी एक्सप्लोरेशन)। वॉल्यूम। अगस्त **2014.339-344**।

5. दलवार, जगदीश लाल। प्रेमचंद के कार्यों में लोकप्रिय संस्कृति का प्रतिनिधित्व। मुंशी प्रेमचंद द्वारा सामाजिक वैज्ञानिक, खंड और यादव। रिसर्च स्कॉलर (एन इंटरनेशनल रेफरीड ई जर्नल ऑफ लिटरेरी एक्सप्लोरेशन)। वॉल्यूम। अगस्त **2014**।

6. बत्रा प्रोमिला। चार्ल्स डिकेंस और प्रेमचंद सामाजिक उद्देश्य वाले उपन्यासकार। दिल्ली चमन ऑफसेट प्रेस, **2011.**प्रिंट

7. नागेंद्र, डॉ. प्रेमचंद। एक एंथोलॉजी। दिल्ली बंसल एंड कंपनी, **2011.** प्रिंट।

8. पांडे गीतांजलि। दो दुनियाओं के बीच प्रेमचंद की एक बौद्धिक जीवनी। नई दिल्ली मनोहर पब्लिशर्स, **2016.** प्रिंट।

9. रामविलास, शर्मा (**2008).** प्रेमचंद और उनका युग**.** नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ॰ **17.** आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ **978-81-267-0505-4.**

10. रामविलास, शर्मा (**2008).** प्रेमचंद और उनका युग**.** नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ॰ **18.** आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ **978-81-267-0505-4.**

11. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , **1995,** पृष्ठ **15**

12. रामविलास, शर्मा (**2008).** प्रेमचंद और उनका युग**.** नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ॰ **19.** आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ **978-81-267-0505-4.**

13. बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-**2,.** वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५६.

14. **"Munshi Premchand:** गांधी और प्रेमचंद का साथ-साथ चलना हिंदी साहित्य में एक महान उपलब्धि"**. Dainik Jagran.** अभिगमन तिथि **2020-07-31.**

15. बाहरी**,** डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश**,** भाग-**2,.** वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५७.

16. रामविलास**,** शर्मा (**2008).** प्रेमचंद और उनका युग**.** नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ॰ **20.** आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ **978-81-267-0505-4.**